Q.1.

प्राचीन सभ्यताओं पर प्रकाश डालें, तो हम पाते हैं कि भारतीय संदर्भ में हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो जैसी सभ्यता अर्थात् सिंधुघाटी सभ्यता ऐतिहासिक रूप से व्यवस्थित एवं पुरातन मालूम पड़ती है।

सिंधु घाटी सभ्यता वर्तमान प्रदेश पाकिस्तान, भारत तथा अफगानिस्तान जैसे क्षेत्रों तक विस्तृत रही है।

हड़प्पा सभ्यता

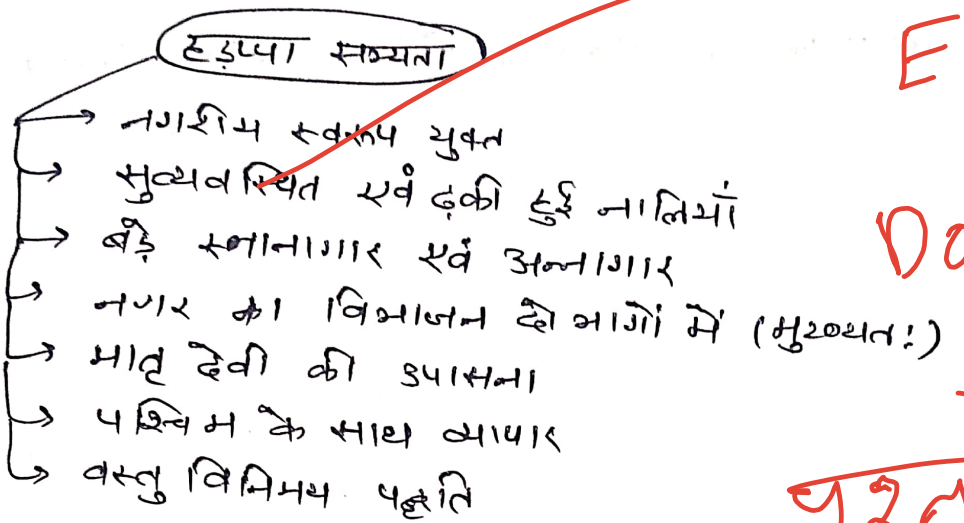

- नगरीय स्वरूप युक्त
- सुव्यवस्थित एवं ढकी हुई नालियाँ
- बड़े स्नानागार एवं अन्नागार
- नगर का विभाजन दो भागों में (मुख्यत:)
- मातृ देवी की उपासना
- पश्चिम के साथ व्यापार
- वस्तु विनिमय पद्धति

हड़प्पा सभ्यता का नगरीय स्वरूप क्षेत्रीय आर्थिक-सामाजिक कार्यों का क्रमिक विकास जान पड़ता है, जिसके तथ्य कुछ इस प्रकार हैं:

1.) नगर मुख्यत: 2 भागों में बँटा था, जिसमें एक भाग कुलीन व शासक वर्ग, तो दूसरा भाग मजदूर, किसान इत्यादियों के लिए था।

2.) नगरीय व्यवस्था के फलस्वरूप वहाँ अन्तर्देशीय व्यापार के साक्ष्य मिलते हैं। जैसे: रोमन साम्राज्य की मुहरें

3.) समाज मुख्यत: 2 वर्गों में बँटा था, जिसमें एक वर्ग कामगार था। सामाजिक भेदभाव नहीं था; अपितु व्यक्ति कार्य के आधार पर परिवार में ही विभक्त था।

4.) कृषि उत्पादन अधिशेष था, जो कि विशाल अन्नागारों की उपस्थिति से पता लगता है।

5.) मिट्टी के बर्तन भी सामाजिक संरचना को बताते हैं। एक ओर भद्दे तथा दूसरी ओर काले पॉलिशदार बर्तन

Scanned with OKEN Scanner

6) व्यापारिक अधिशेष भारत के पक्ष में था, विभिन्न प्रमाणों से ज्ञात पड़ता है।

7.) मातृदेवी की पूजा होती थी व नगर का प्रशासन वणिक एवं प्रशासक वर्ग के पास था।

उक्त कथनों से यह स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि हड़प्पा ही नहीं अपितु सिंधुकालीन सभ्यताओं का नगरीय रूप उनके सामाजिक - आर्थिक कारकों के क्रमिक विकास का ही परिणाम था।

4.5 / 10

तीन चरणों में
कालक्रम
— 3200 से 2600 ईपूर्व
पशुपालन से नगरीय सभ्यता की ओर
— 2600 से 1900
नगरीय सभ्यता

Scanned with OKEN Scanner

प्र.2 द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण वैश्विक स्तर पर अनेक परिवर्तन मुख्य तौर पर सामने आए। चूंकि विश्वयुद्ध महाशक्तियों के अंतर्द्वन्द्वों का परिणाम था। अतः इसकी समाप्ति पर विभिन्न राजनीतिक उठापटक एवं परिवर्तन हुए।

भूमिका ठीक है

विश्वयुद्ध के परिणाम

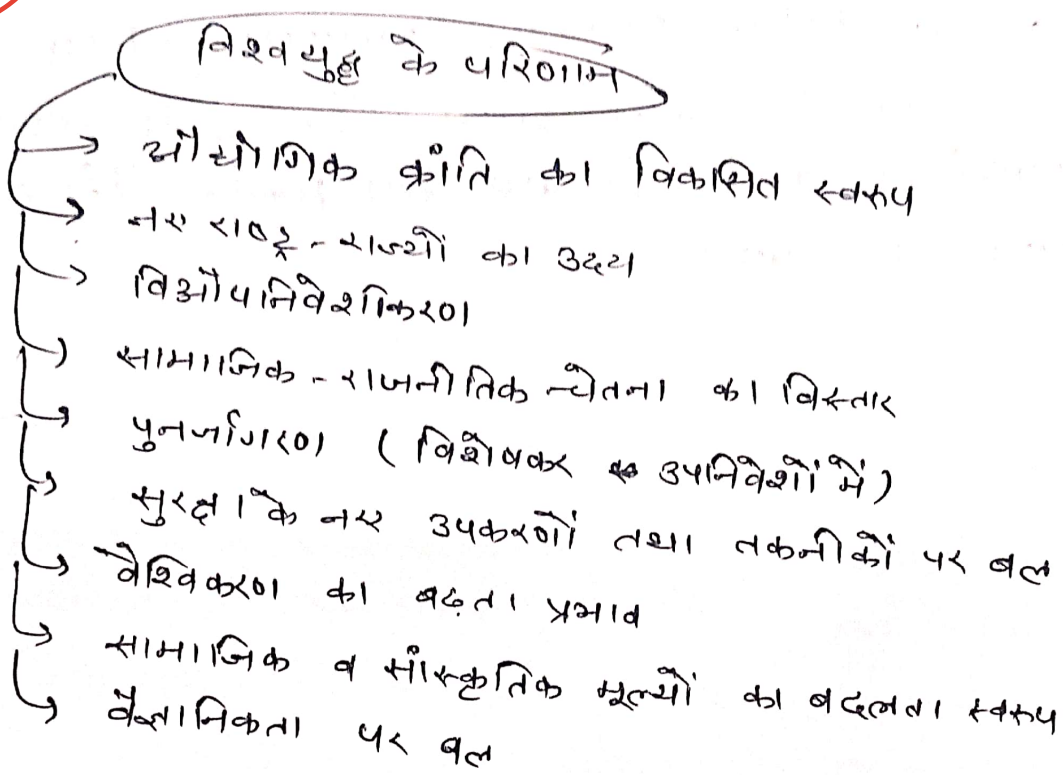

- → औद्योगिक क्रांति का विकसित स्वरूप
- → नए राष्ट्र-राज्यों का उदय
- → वि-औपनिवेशीकरण
- → सामाजिक-राजनीतिक चेतना का विस्तार
- → पुनर्जागरण (विशेषकर उपनिवेशों में)
- → सुरक्षा के नए उपकरणों तथा तकनीकों पर बल
- → वैश्विकरण का बढ़ता प्रभाव
- → सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का बदलता स्वरूप
- → वैज्ञानिकता पर बल

विश्वयुद्ध के कारण संपूर्ण विश्व उद्योग एवं उनका बाजार बनकर रह गया। औद्योगिकरण के कारण यूरोप एवं अमेरिका में नए राष्ट्रों (जैसे: जर्मनी, इटली) का उदय हुआ तथा ये विकसित देशों की ओर अग्रसर हुए।

→ उपनिवेशों के विश्वयुद्ध में भागीदार होने के कारण उन्हें अपनी शक्ति व आत्मबल का ज्ञान हुआ, जिससे अंततः उन्होंने ये बेड़ियाँ तोड़ डाली।

→ सार्वभौमिकरण और बदलते दृष्टिकोण के कारण वे पश्चिमी दार्शनिकों के विचारों को जानने समझने लगे तथा उनके आदर्शों (जैसे: स्वतंत्रता, समानता इत्यादि) को अपनाने लगे।

उदाहरण — गुटनिरपेक्ष आंदोलन, NATO, वारसॉ पैक्ट जैसे गठनों का निर्माण

→ औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप रक्षा उपकरणों का उत्पादन

शीतयुद्ध

हुआ। फलतः नई महाशक्तियों का उदय हुआ। (जैसे- अमेरिका) और सोवियत रूस

→ राजनीतिक स्तर पर स्वतंत्रता की मांग मुखर हुई एवं काफी देश लोकतंत्र की राह पर अग्रसर हुआ।

वस्तुतः द्वितीय विश्वयुद्ध आगामी भविष्य के लिए एक पथप्रदर्शक के रूप में सामने आया और इसी आधार पर भारत जैसे उपनिवेश स्वतंत्र हो पाए तथा लोकतंत्र जैसे गुणों को आत्मसात कर पाए।

3.5/10

Q3 भारतीय इतिहास के संदर्भ में देखा जाए, तो भारत कई वर्षों तक औपनिवेशिक बेड़ियों में बँधा रहा। परंतु इसी क्रम में जैसे-जैसे जनभावना जाग्रत हुई, तो एक व्यापक स्तर पर सन् 1858 की क्रांति ने जन्म लिया, जो भारतीय इतिहास में काफी परिवर्तनकारी रही।

1858 की क्रांति के पश्चात् भारत में अनेक संवैधानिक परिवर्तन हुए तथा आगे चलकर इन्हीं के आधार पर भारत के संवैधानिक शासन की आधारशिला रखी गई।

1858 के बाद के संवैधानिक विकास

1.) 1858 के पश्चात् भारत का शासन पूर्णरूपेण ब्रिटिश सरकार के हाथ में आ गया था।

2.) भारत में वयस्क मताधिकार का प्रारंभ

3.) महिलाओं को भी मताधिकार

4.) इन परिवर्तनों में कई अधिनियमों ने भारत के एकीकरण में भूमिका निभायी।

5.) 1919 के अधिनियम से द्विसदनीय व्यवस्था का प्रारंभ.

6.) सदन में बहस व पूरक प्रश्न पूछने का प्रावधान

7.) बजट पर चर्चा

8.) स्वायत्त स्थानीय शासन

9.) भारतीय संविधान की आधारशिला : भारत शासन अधि. 1935

10) स्वतंत्रता, समानता, बंधुता जैसे तत्वों का आत्मसात्करण

11) औद्योगिक विकास (हालाँकि यूरोप के मुकाबले नगण्य)

12) रेलवे के परिचालन से संपूर्ण भारत का जुड़ाव

13.) शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे बुनियादी सुविधाएँ

14.) सिविल सेवा प्रतियोगी परीक्षा द्वारा चयन

Scanned with OKEN Scanner

उक्त बिंदुओं के आधार पर भारतीय प्रशासन और शासन की नींव रखी गई, जो भारतीय समाज को एक व्यापक सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, समानता, बंधुता, स्वतंत्रता युक्त बनाता है, तो साथ ही शासन को लोकतांत्रिक बनाता है।

4. / 10

Scanned with OKEN Scanner

Q4 भारत के संदर्भ में मंदिर स्थापत्य एक बेहतरीन एवं विकसित रूप में विद्यमान थी। इसे मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है।

1.) नागर स्थापत्य कला
2.) बेसर स्थापत्य कला
3.) द्रविड़ स्थापत्य कला

कुछ संरचनात्मक भिन्नताओं के कारण ये शैलियाँ अपने रूप में अप्रतिम हैं। बेसर स्थापत्य, नागर व द्रविड़ शैलियों का मिश्रित रूप है।

नागर स्थापत्य

→ यह मुख्यतः उत्तर भारत का प्रतिनिधित्व करती है।
→ मंदिरों के चारों तरफ परकोटा प्रायः अनुपस्थित
→ मंदिरों के शिखर रेखीय है अथवा सपाट
→ शिखर के ऊपर कलश की संस्थना।
→ मंदिर सामान्यतः ऊँचे हुए चबूतरे पर मौजूद
→ परिक्रमा मेधि की प्रायः अनुपस्थिति
→ गोपुरम् / प्रवेश द्वार नहीं
प्रमुख उदाहरण : उड़ीसा के मंदिर

द्रविड़ स्थापत्य

→ मुख्यतः दक्षिण भारत का प्रतिनिधित्व
→ मंदिरो के चारों तरफ परकोटा उपस्थित
→ मंदिरों के शिखर प्रायः पिरामिडनुमा।
→ शिखर पर आमलक की संरचना।
→ मंदिर प्रायः बिना चबूतरे के
→ परिक्रमा मेधि की उपस्थिति
→ गोपुरम् उपस्थित

उदाहरण : चोलकालीन मंदिर, पल्लवकालीन मंदिर

उक्त विभिन्नताओं के बावजूद मंदिर स्थापत्य भारत में हमेशा से ही एक समेकित भाव प्रस्तुत करता आया है, तथा इसके स्थापत्य के आधार पर कई मंदिरों को UNESCO विश्व धरोहरों में शामिल किया गया है, जो भारत की <u>soft power</u> को बढ़ाने में महत्वपूर्ण साबित होगा।

इन मंदिरों का चित्र भी बना सकते हैं

4/10

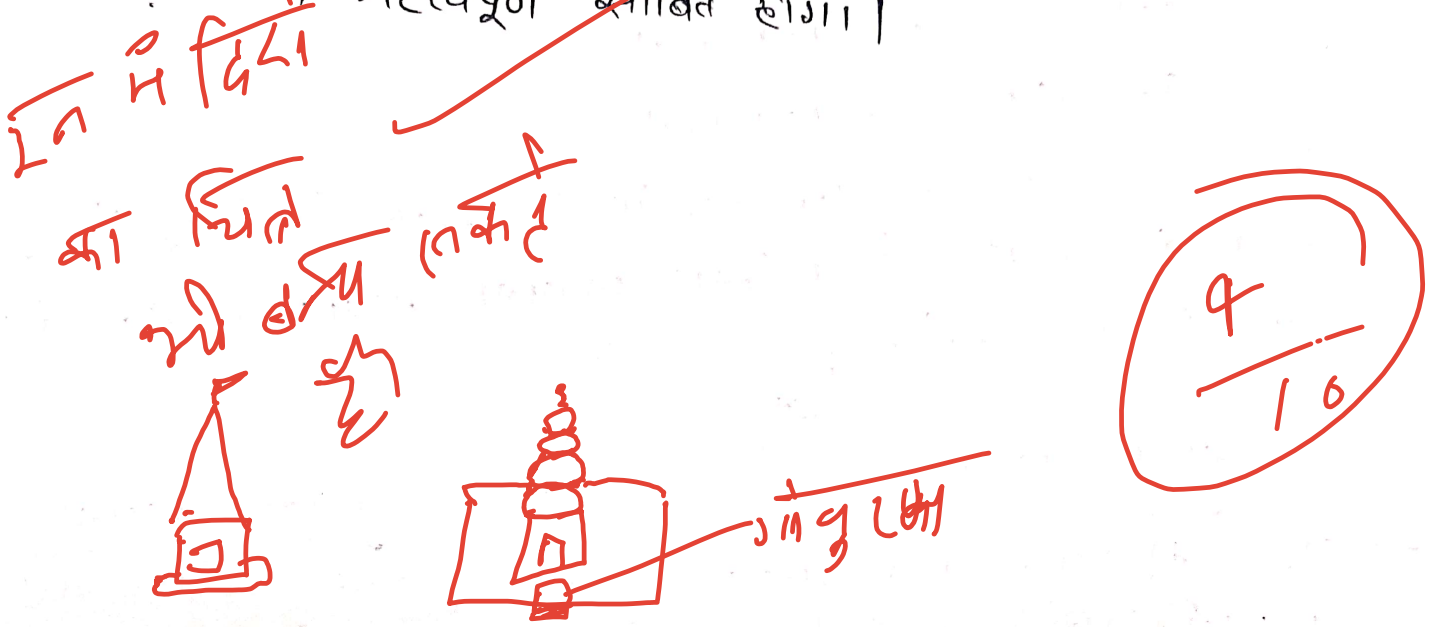

Q.5 मध्य अक्षांशों पर गर्म एवं ठंडी वायुराशियों के मिलने से वाताग्री वर्षा होती है, जो मुख्यतः चक्रवाती पवनों के कारण होती है।

भूमिका ठीक है

वाताग्रजनन से वाताग्रविनाश की संपूर्ण प्रक्रिया वातावरण में विभिन्न प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है।

वाताग्रजनन: जब ठंडी वायुराशि एवं गर्म वायुराशि आपस में टकराती है, तो वाताग्रजनन होता है। इसकी स्थितियाँ निम्न प्रकार हैं:

1.) ठंडी वायुराशि सर्वप्रथम गर्मवायुराशि के समांतर परंतु विपरीत दिशा में प्रवाहित होती है। फलस्वरूप ये स्थिर व अवस्थिति का परिणाम है और वायुकर्तन से रॉसबी तरंग का निर्माण होता है।

2.) अब गर्म वायु राशि ठंडी वायु राशि के क्षेत्र में प्रवेश करती है, तो गर्म वायु राशि धीरे-धीरे ऊपर उठती है, तो यहाँ ग्रीष्म वाताग्र का निर्माण होता है। फलस्वरूप धीमी और विस्तृत क्षेत्र में बारिश होती है।

विवरण अच्छा है

3.) अब ठंडी वायु गर्म वायुक्षेत्र में प्रवेश करती है, तो गर्म वायु को एकाएक ऊपर विस्थापित कर देती है। फलस्वरूप शीत वाताग्र का निर्माण होता है और तेज व कम क्षेत्र में बारिश होती है।

कारण भी बताए

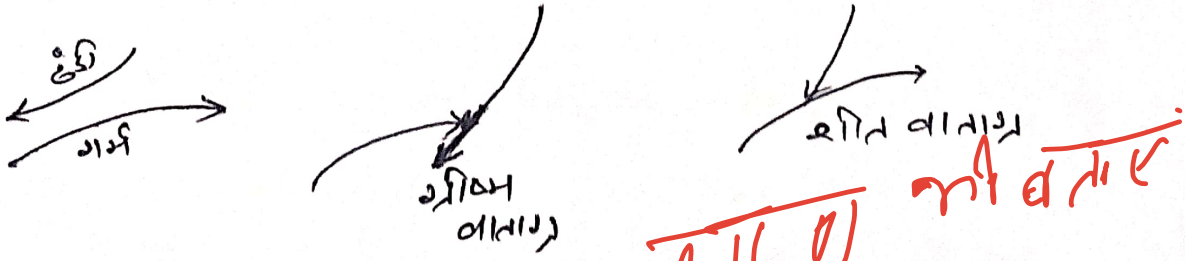

वाताग्रविनाश: बारिश के पश्चात मौसम शांत एवं वायुराशियाँ तली में बैठने लगती हैं। धीरे-धीरे वे ठंडी होने लगती हैं, फलस्वरूप वाताग्र का जुड़ाव टूट जाता है और पुनः

Scanned with OKEN Scanner

वायुराशियाँ समांतर प्रवाहित होने लगती हैं।

→ वायुराशियों के जुड़ाव के टूटने के साथ ही वाताग्र क्षय हो जाता है और प्रतिचक्रवातीय दशा उत्पन्न हो जाती है।

निष्कर्ष भी लिखें

3.5/10

Scanned with OKEN Scanner

Q.6

भूकंप पृथ्वी के आंतरिक बल से उत्पन्न अथवा बहिर्जनित भी हो सकता है। मुख्यतः आंतरिक परतों से जब भूकंपी तरंगें उत्पन्न होती हैं, तो सतह पर सामान्यतः हलचल महसूस की जाती है, जो मुख्यतः भूकंप है।

परिभाषा ठीक है

मापन मुख्यतः भूकंपी तरंगों की तीव्रता या परिमाण द्वारा भूकंप का किया जाता है। इसी आधार पर भूकंप को मापने के लिए 2 भूकंपलेखी पैमानों का आधार बनाया जाता है।

(i) रिक्टर स्केल
(ii) मरकैली स्केल

मुख्यतः रिक्टर स्केल के माध्यम से भूकंप की तीव्रता मापी जाती है और यह मुख्यतः गणनात्मक आधार पर आँकड़े उपलब्ध कराता है।

उल्टा है

मरकैली स्केल मुख्यतः परिमाण का मापक है, जो व्यवहारिक रूप में हुए प्रभाव का मापन करता है। इसी आधार पर भूकंप का परिमाण ज्ञात किया जाता है।

मुख्यतः भूकंप 3 प्रकार के होते हैं:

1.) छिछले उद्गम केंद्र के → तीव्रता सर्वाधिक

2.) मध्यम उद्गम केंद्र के → तीव्रता कम

3.) गहरे उद्गम केंद्र के → तीव्रता सबसे कम

भारत के संदर्भ में मुख्यतः भूकंप हिमालयी क्षेत्र में आते हैं, जिसका मुख्य कारण प्लेट विवर्तनिकी / प्लेट सीमांत की मौजूदगी है। चूंकि भारतीय प्लेट का अधिक्षेपण अपेक्षाकृत कम हुआ है, तो भूकंप ~~छिछले~~ मध्यम व छिछले उद्गम के आते हैं। साथ ही द्वीप समूहों पर भी छिछले उद्गम केंद्र के भूकंप आते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

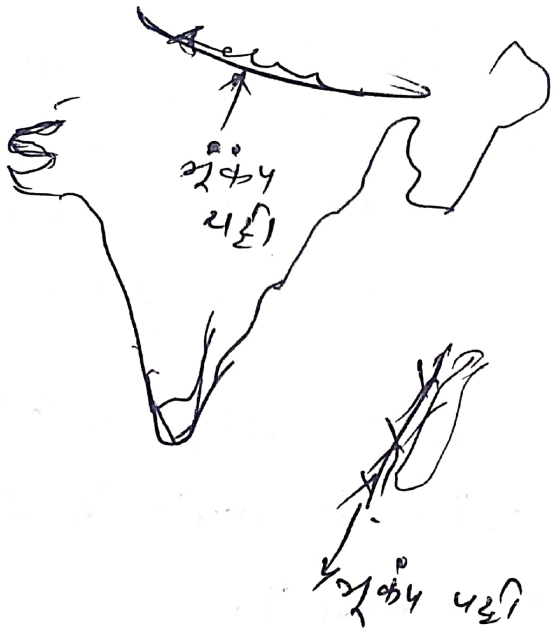

स्रोतों को चिन्हित करें

जोन II –
III –
IV –
V – हिमालय कटिबंध स्रोत

भूकंप की तीव्रता का आँकलन करने हेतु (सटीक आँकलन) अभी विभिन्न शोधों पर वैज्ञानिक कार्यरत हैं।

प्रभावो भूमिका लिखें

3/10

Q7 वैश्वीकरण से आशय संपूर्ण विश्व से जुड़ाव है। मुख्यतः वैश्वीकरण किसी भी संस्कृति, सभ्यता, व्यापार, बाजार इत्यादि को वैश्विक स्तर पर प्रभावित करता है।

वैश्वीकरण एक व्यापक अवधारणा के साथ संपूर्ण विश्व का कमोबेश समावेशन करता है। अतः लोक संस्कृति, सभ्यताएँ, मानव व इतिहास, अर्थव्यवस्था इससे अछूती नहीं रही है।

वैश्वीकरण के प्रभाव

सकारात्मक

- → संपूर्ण विश्व स्तर तक पहुँच
- → वैश्विक घटनाक्रम के बारे में ज्ञान
- → अर्थव्यवस्था व संस्कृति पर प्रभाव
- → मृदु शक्ति को सुदृढ़ करने में महती भूमिका
- → वैश्विक मानकों के परिपेक्ष्य में तुलना
- → सांस्कृतिक सकारात्मकताओं का विकास
- → उपभोक्तावादी संस्कृति व मनोवृत्ति के बीच सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा।

नकारात्मक

- ↳ मुख्यतः उपभोक्तावादिता को बढ़ावा
- → राजनीतिक उद्देश्य को सार्थक बनाने हेतु असमंजस
- → सांस्कृतिक विभेद एवं असामंजस्य
- → पुरातन मूल्यों का विखराव
- → नवीनता व आधुनिकता के कारण अश्लीलता में वृद्धि
- → नैतिक पैमानों व मानकों का ह्रास
- → रंगभेद, जातिवाद जैसी समस्याओं का प्रचार-प्रसार होने के कारण महत्वहीनता की स्थिति उत्पन्न

चूँकि वैश्वीकरण एक नज़रिए से अति आवश्यक है; परंतु वैश्वीकरण के नाम पर गलत आधुनिकता एवं अश्लीलता के पुट तथा राजनीतिक इच्छा व स्वहितवाद को बढ़ावा दिए जाने के कारण यह लोक संस्कृति को क्षीण भी कर रहा है।

अतः लोक सांस्कृतिक मूल्यों को समाहित करते हुए एकीकृत सकारात्मक सोच के साथ वैश्वीकरण सहायक सिद्ध हो सकता है।

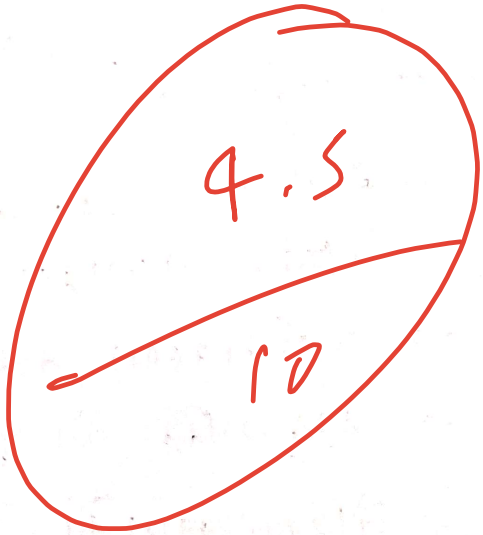

Q.8 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अनेक क्रांतिकारियों ने भाग लिया तथा एक सकारात्मक की भावना जन-मानस में पैदा करने में सफल रहे।

सुभाषचंद्र बोस भी उन्हीं में से एक थे। सुभाषचंद्र बोस गाँधी की साधन-साध्य की नैतिकता के बजाए साध्य की नैतिकता में विश्वास रखते थे। इसी आधार पर वे क्रांति के माध्यम से भारत की स्वाधीनता के समर्थक थे।

भारत से सिंगापुर चले जाने के बाद बोस ने 1942 ई० के समय में आजाद हिंद फौज का गठन किया गया। जो भारत के बाहर भारत की स्वतंत्रता हेतु प्रयासरत थी।

सुभाषचंद्र बोस द्वारा योगदान

→ वे नेहरू के विचारों के समर्थक थे तथा भारत की स्वतंत्रता के पक्षधर थे।

→ उन्होंने गाँधी के असहयोग आंदोलन वापस लेने पर ऐतराज जताया।

→ वे कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन के अध्यक्ष रहे साथ ही वे भारत के डोमिनियन स्थिति के बनने के पक्ष में नहीं थे।

→ सुभाष बाबू भारत द्वारा जर्मनी का समर्थन व सहयोग की अपेक्षा रखते थे; परंतु गाँधी इसके पक्ष में नहीं थे।

आजाद हिंद फौज का योगदान:

→ इनके सैनिकों ने जापान के साथ मिलकर ब्रिटिश पर आक्रमण करने में सहयोग किया (बर्मा पर आक्रमण व उत्तर पूर्व भारत में)

→ भारत की स्वतंत्रता हेतु तत्वों को समाप्त न होने दिया।

Scanned with OKEN Scanner

एवं भारत के बाहर निरंतर संघर्ष जारी रखा।

→ भारत को स्वतंत्र कराने हेतु जनजागरूकता, स्वावलंबन जैसे गुणों का प्रसार किया।

चूँकि सुभाष बोस भारत के संदर्भ में स्वतंत्रता हेतु कोई भी क्रांति के पक्ष में थे। अतः सेना का गठन इसका परिचायक है। परंतु क्रांति पूर्व / अभियान पूर्व उन्होंने कहा कि "हम इस कार्य हेतु बापू का आशीर्वाद चाहते हैं।

3.5/10

Q.9 सोशल मीडिया आधुनिक युग में जनसामान्य तक बात पहुँचाने का ज़रिया बन चुकी है। इसी आधार पर कई तथ्य सही या गलत तरीके से तोड़-मरोड़कर जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रचलन भी सही है। (जैसे: 2000 के नोट में चिप, सांप्रदायिकता, सुशांत राजपूत के केस में मीडिया ट्रायल इत्यादि)

सांप्रदायिक ध्रुवीकरण वर्तमान में भारतीय परिपेक्ष्य में उभरती हुई एक गंभीर समस्या है, जोकि सोशल मीडिया द्वारा जनमानस तक पहुँचायी जा रही है।

चूँकि सोशल मीडिया में फैक्ट / तथ्य जाँच नहीं होने के कारण जनता को बहलाया जा सकता है। अतः इस पर विचार आवश्यक है।

प्रभाव

- सांप्रदायिक ध्रुवीकरण सामाजिक दंगों व हिंसा को मुखर करते हैं।
- जातिवाद व संप्रदायवाद उभरता है।
- किसी भी व्यक्ति के प्रति पूर्वधारणा युक्त हो जाते हैं।

सोशल मीडिया के प्रभाव

- तथ्य-जाँच नहीं
- उचित नियमन का अभाव
- जनसामान्य तक सुलभ पहुँच
- संप्रदायवाद जैसे विषयों का जनसामान्य में फैलाव व विघटन की समस्या को बढ़ावा

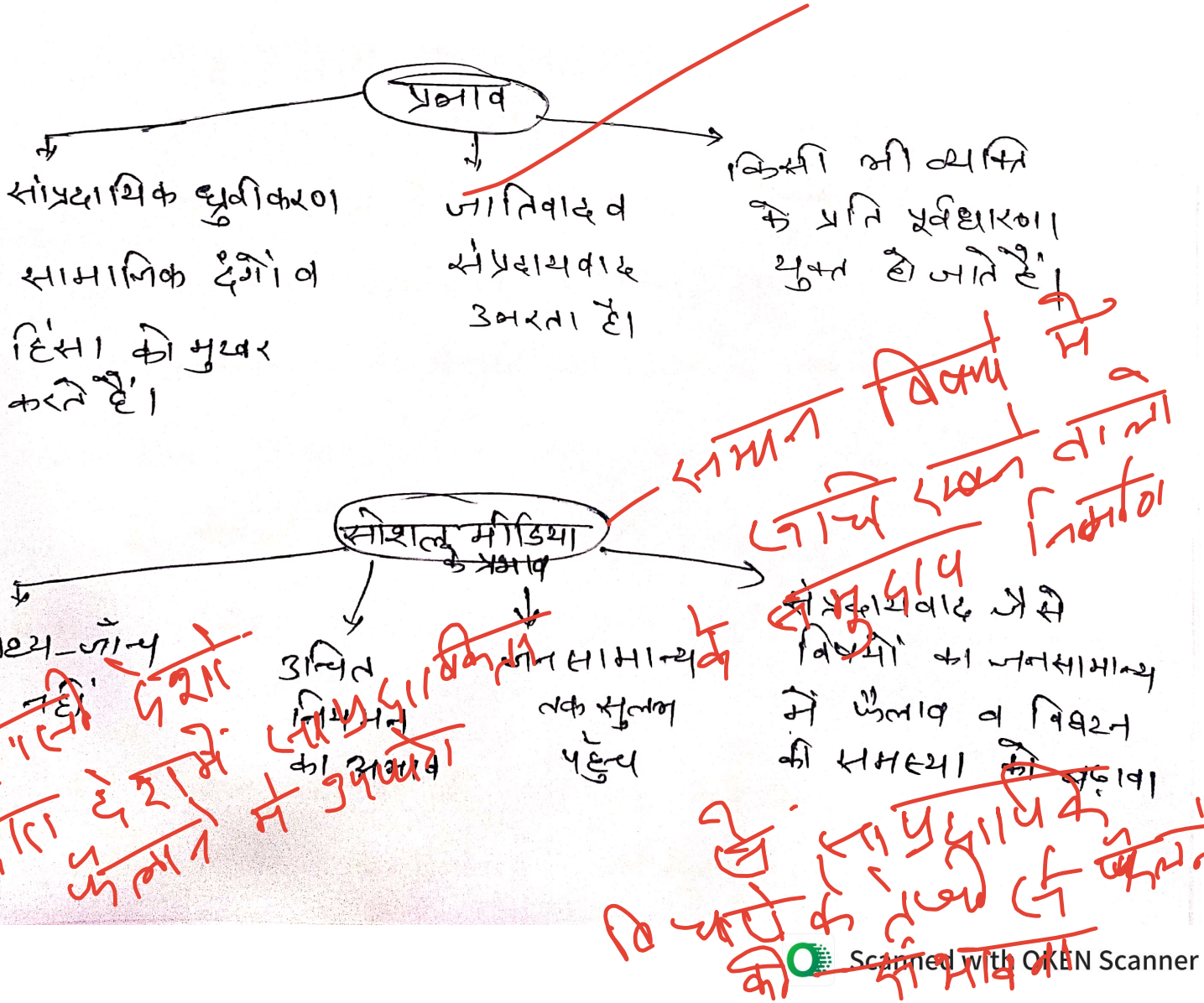

चूँकि इतने नकारात्मक प्रभाव होने पर भी सोशल मीडिया के सकारात्मक पक्षों को नकारा नहीं जा सकता। अतः सरकार तथा कंपनियों को एकसाथ आकर इसके नियमन हेतु उपाय आवश्यक है, जो कि वर्तमान परिदृश्य में भारतीय तत्व भाईचारा, बंधुता को मुखर कर सके।

3.5/10

Q.10 भारत में काफी समय से नवीन विवाद उत्पन्न होकर सामने आते रहे हैं, जो कि समाज की उन्नति को सार्थक बनाते हैं। इसी आधार पर वर्तमान समय का गंभीर मुद्दा है "वैवाहिक बलात्कार"।

वैवाहिक बलात्कार कई मायनों में अटपटा शब्द लगता है; परंतु किसी व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध, भले ही वह शादी के बंधन में बंधा हो, यौन क्रियाएँ करना नैतिक रूप से व व्यवहारिक रूप से सही नहीं है।

वैवाहिक बलात्कार एक अपराध है, जो निम्न तथ्यों से प्रमाणित किया जा सकता है:

1.) बिना सहमति से किया गया कोई भी कार्य अनैतिक है।

2.) यह व्यक्ति के मानसिक व चेतन स्तर पर नकारात्मक अभिव्यक्ति उत्पन्न करता है।

3.) यह व्यक्ति को केवल वस्तु बनाकर रख देता है।

4.) व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विरुद्ध है।

5.) अवसाद की स्थिति को जन्म दे सकता है।

6.) एक विकृत पारिवारिक व्यवस्था की ओर उन्मुख हो सकता है।

7.) संबंध विच्छेद व दूरी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

8.) एक व्यक्ति की गरिमा का सर्वस्व हनन एवं उसके मूलाधिकारों का हनन है।

फलतः संवैधानिक आधार व नैतिक आधार पर वैवाहिक बलात्कार अपराध व शोषण का रूप है, जो व्यक्ति विशेष को वस्तु की भाँति लाकर खड़ा कर देता है। इस संदर्भ में भारतीय समाज को सुधार की आवश्यकता है।

4/10

Q.11 ओशन मेमोरी एक तरह की ताप के परिवर्तन की नियत-प्रकृति है, जो समुद्री की निचली परतों में लगभग समान सी बनी रहती है। एक संदर्भ निचली परतों की मोटाई से भी लगाया जा सकता है।

परंतु अभी साइंस जर्नल में प्रकाशित एक लेख के अनुसार इस ताप परिवर्तन में विसंगति एवं परतों में मोटाई में कमी आने को ही समुद्र स्मृति लोप (ओशन मेमोरी लॉस) की संज्ञा दी जा रही है।

परिणाम

- मुख्यतः यह घटना मानव द्वारा किए गए जलवायु परिवर्तन की देन है।
- → ग्लोबल वार्मिंग के कारण समुद्र जल स्तर में वृद्धि भी इसका एक मुख्य नकारात्मक प्रभाव है।
- → ओशन मेमोरी लॉस के कारण समुद्र तल में रह रहे जीव-जंतुओं की मृत्यु हो सकती है, जो एक जैविक असंतुलन पैदा कर सकता है।
- → कई वनस्पतियों का विनाश तथा समुद्र की लवणीयता में वृद्धि हो सकती है।
- → समुद्री धाराओं में विसंगति के कारण कई तटीय क्षेत्रों में असामान्य स्थिति उत्पन्न हो सकती हैं।
- → मानसून में विसंगति
- → प्राकृतिक आपदाओं का विस्तार
- → तूफान, चक्रवात जैसी समस्याओं का विस्तार

[भविष्य के मानसून की पूर्वानुमान की सटीकता में वृद्धि होगी]

Scanned with OKEN Scanner

→ मछली समुद्री उत्पादन में कमी एवं बाधाएँ

→ ताप परिवर्तन से विभिन्न रोगों एवं जीवाणुओं के प्रसार की आशंका

→ सुखमती

उक्त समस्याएँ काफी भयानक एवं जनजीवन को अस्त-व्यस्त करने वाली हो सकती है, जो अनेक अप्रत्याशित संभाव्य खतरों को पैदा कर सकती हैं, जिससे जलवायु विसंगति के कारण मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो सकता है। इस संदर्भ में विभिन्न देशों को साथ आकर सकारात्मक कदम उठाने चाहिए, जो इसके सुधार में सहायक हो सकें।

6/15

Q.12 गाँधी के अनुसार साध्य के पवित्र होने के लिए साधन भी पवित्र होना अत्यंत आवश्यक है। इसी आधार पर वे अहिंसा पर अत्याधिक बल देते थे और हृदय परिवर्तन पर विश्वास रखते थे।

इसी संदर्भ में उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के परिवेश्य में जनमानस से शांतिपूर्वक असहयोग आंदोलन प्रारंभ करने का प्रस्ताव रखा और आश्वासन दिया कि अगर हम सही ढंग से असहयोग आंदोलन चलाएंगे, तो 1 वर्ष के भीतर स्वराज पा सकेंगे। इस आंदोलन के प्रारंभ होने के पीछे निम्न लिखित कारण थे:

कारण

→ भारत का सांप्रदायिक एकीकरण आवश्यक था।

→ भारतीय लोग गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ स्वाधीन जीवन चाहते थे, जो पश्चिमी विचारकों की अभिव्यक्ति के अनुरूप था।

→ किसान, मजदूर वर्ग शोषण से अत्याधिक त्रस्त थे

→ 1857 की क्रांति की चेतना समग्र भारत में व्याप्त थी

→ विभिन्न हिस्सों में की गई क्रांति, किसान विद्रोह, मजदूर विद्रोहों का दमन

→ [redacted] भारतीय बाजारों में अंग्रेजी प्रभुत्व

→ रेलवे के विकास से भारतीय लोगों में जुड़ाव

उक्त कारणों ने आंदोलन को प्रेरित किया परंतु [redacted] सफल नहीं हो पाया।

विफलता के कारण और बाधाएँ:

→ संपूर्ण भारतीयों का समर्थन प्राप्त नहीं

Scanned with OKEN Scanner

→ किसान मुख्यतः आंदोलन से परे
→ रविंद्रनाथ टैगोर जैसे लोगों द्वारा अंग्रेजी सामान जलाए जाने का समर्थन नहीं।
→ लंबे समय से चलने पर भी परिणाम हीन
→ चौरा-चौरी हत्याकांड
→ अहिंसा से हटकर हिंसा अपनाए जाने के कारण विभिन्न लोगों द्वारा विरोध
→ कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा समर्थन नहीं

उक्त बाधाओं के बावजूद यह आंदोलन भारतीय समाज पर व्यापक असर छोड़ पाया तथा इसने पूरे भारत को सांप्रदायिक व देशीयता के एक हिस्से में पिरो दिया। इसी आधार पर लोगों में राष्ट्रवाद जागा। फलतः भारत की स्वतंत्रता 1947 में परिणत हुई।

4.5/15

Q.13 भारतीय संदर्भ में स्वतंत्रता हेतु व्यापक क्रांतियों की शुरुआत सन् 1857 के विद्रोह से मानी जाती है। इसी आधार पर समय-समय पर विभिन्न क्रांति, आंदोलन, विद्रोह इत्यादि होते रहे, जिसने स्वाधीनता की भावना को जागृत बनाए रखा।

19 वीं सदी में अनेक किसान विद्रोह, मजदूर हड़ताल, सैन्य विद्रोह हुए। इनका प्रसार 20 वीं सदी तक भी रहा परंतु एक व्यापक एवं सुव्यवस्थित रूप में।

20 वीं सदी के प्रारंभ में यंग बंगाल आंदोलन, गदर पार्टी, स्वराज पार्टी इत्यादि उभरकर सामने आए जिन्होंने 19 वीं सदी के अंत व 20 वीं सदी के प्रारंभ में निर्वात को भर दिया। इसके लिए अनेक परिस्थितियाँ उत्तरदायी थीं;

1.) अनेक विचारकों तथा पाश्चात्य दर्शन से भारतीय समाज प्रभावित था।

2.) 1857 की क्रांति के पश्चात् भारतीय समाज समग्रता के स्तर पर सोचने लगा था।

3.) विभिन्न उपन्यास, कहानियों के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जा रहा था।

4.) इतिहास बोध एवं साहित्य के तथ्यों को जनता के समक्ष सरल रूप में प्रस्तुत किया जा रहा था।

5.) रेलवे के परिचालन ने सांप्रदायिक व जातीगत दूरियाँ मिटाने में भूमिका निभाई।

6.) गाँधी, जिन्ना जैसे नेतृत्वकर्ताओं के होने से संपूर्ण देश मानो एक धागे में पिरो दिया गया।

7.) कांग्रेस में जनमानस की भागीदारी बढ़ने लगी।

पहले दशक में ये लोग नहीं थे

8.) विभिन्न क्रांतिकारी गतिविधियाँ (जैसे- लखनऊ षड्यंत्र, दिल्ली षड्यंत्र) इत्यादि को बढ़ावा मिला।

9.) कांग्रेस के शांतिवादी विचारकों की असफलता से क्षुब्ध होकर क्रांतिकारी गतिविधियों में लोग भाग लेने लगे।

10) इन्हीं आधारों पर जापान द्वारा ब्रिटिश सेना को हराया जाना भी प्रेरणादायक रहा।

राजनीतिक निर्वात / नीरसता जो प्रारंभिक 20वीं सदी में उत्पन्न होने के बावजूद, इन्हीं क्रांतिकारी समूहों के उदय द्वारा स्वतंत्रता की भावना को बनाए रख पाने में सफल हुई। फलतः भारतीय समाज स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु तत्पर रहा।

कंटेंट को समझो और बेहतर करो

5/15

Scanned with OKEN Scanner

Q.14 भारत को प्राचीन समय में सोने की चिड़िया कहा जाता था। हालाँकि ऐतिहासिक तौर पर भारत व्यापार आधिशेष की स्थिति में सदैव रहा है, जो सिंधु घाटी सभ्यता से पता लगता है। परंतु औपनिवेशिक काल ने भारत की आर्थिक व्यवस्था को लचर एवं पंगु बना दिया है। भारत से धन निकासी एवं जन सामान्य का अत्यधिक शोषण भारतीय आर्थिक परिदृश्य से एक नकारात्मक आयाम रहा है।

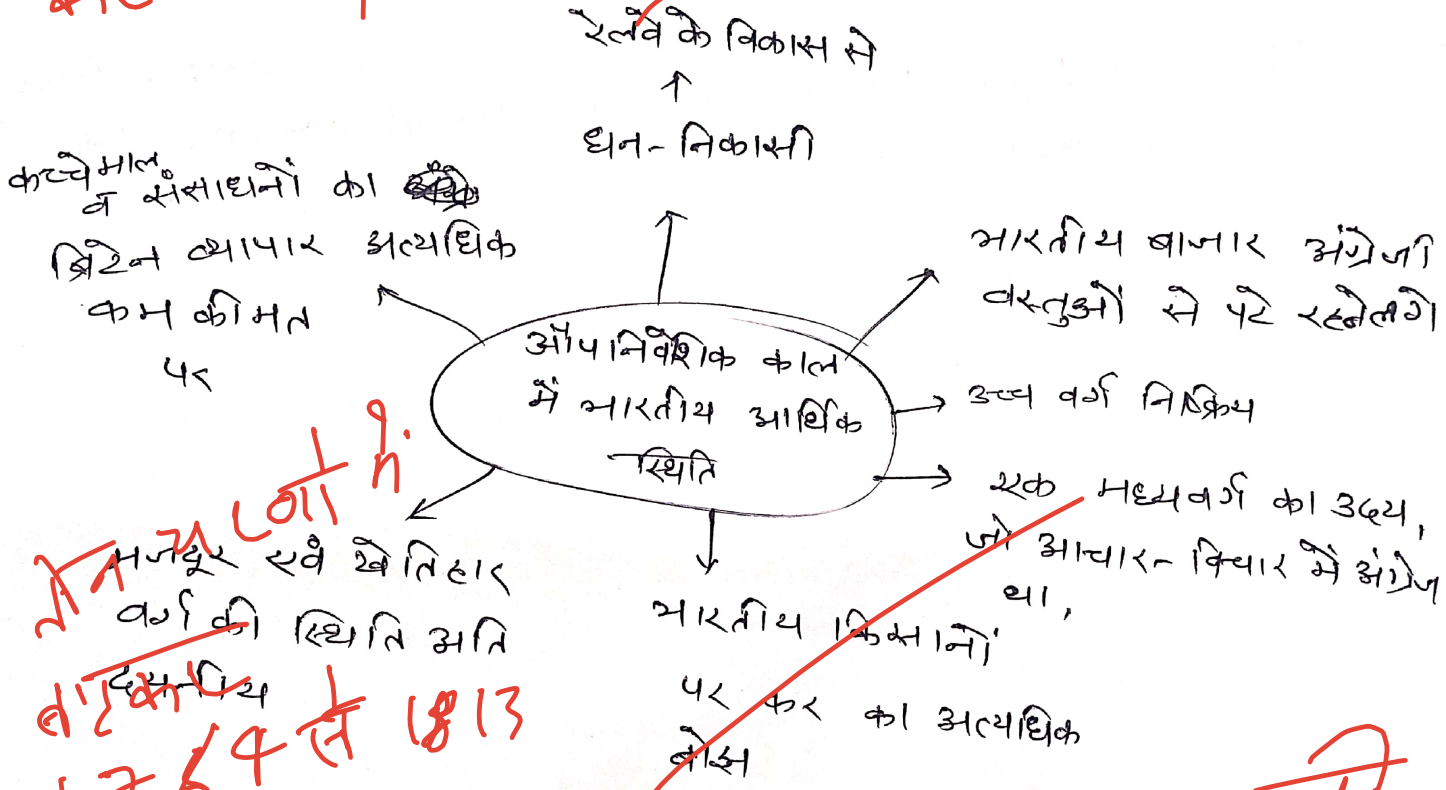

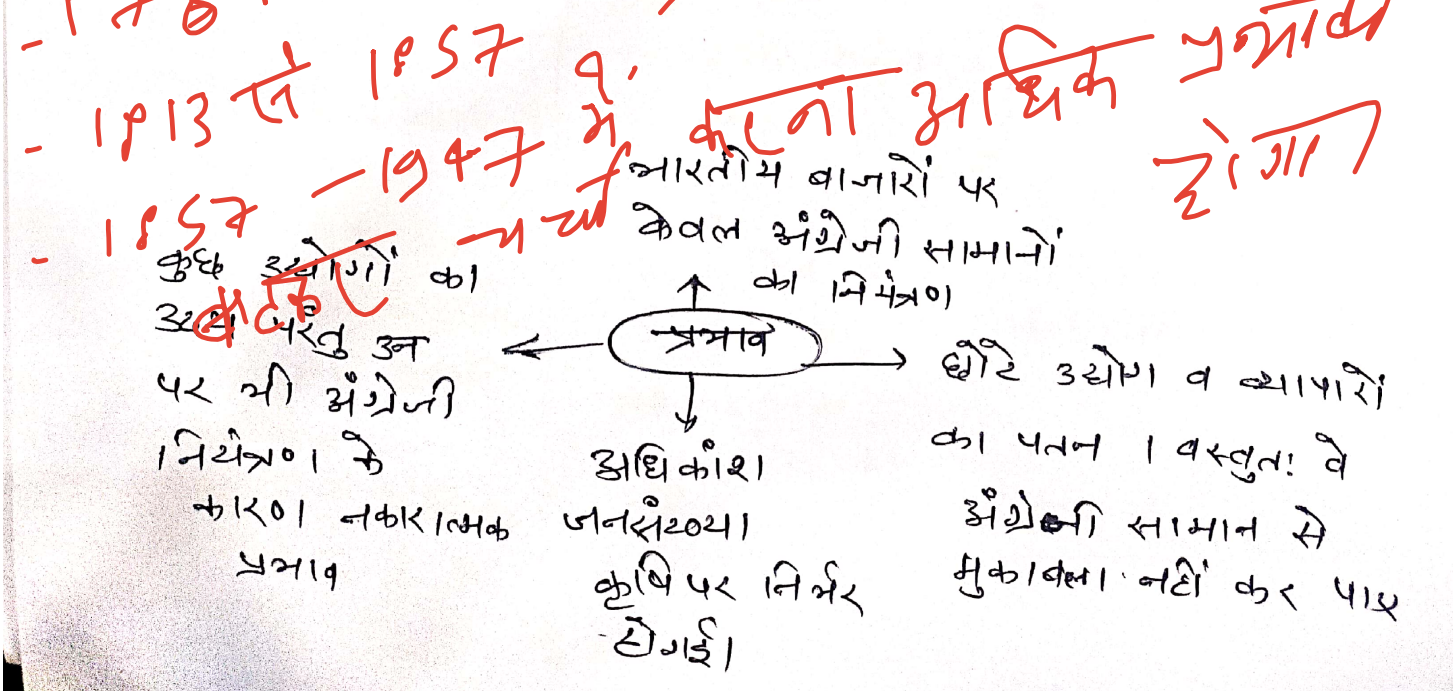

मुख्यतः भारतीय अर्थव्यवस्था अंग्रेजी शासन काल के समय कृषि प्रधान हो गई। अकालों की बारंबारता बढ़ी। किसान व्यापारिक ~~फसलों~~ फसलों के उत्पादन पर बल दे रहे थे।

भारत एक गरीब एवं जीर्ण-शीर्ण राज्य बनकर रह गया, जो अंग्रेजी हुकूमत के चलते न तो विकास कर पाया और न ही अपनी आर्थिक दशा सुधारने में सफल हो सका।

कुछ लेपमात्र विकास दिखाई पड़ा, जो कि अंग्रेजी उद्देश्य से था, नाकि भारतीय उद्देश्य से।

Q.15 "किसी भी राष्ट्र को औद्योगिक व्यवस्था के अधीन विकसित किया जा सकता है; अगर उसके पास इस्पात एवं लोहे जैसे संसाधन उपलब्ध हों, तो।"

उक्त कथन स्पष्ट करता है कि किसी देश की प्रगति में लौह एवं इस्पात उद्योग किस हद तक सकारात्मक कारगर हो सकता है।

इस्पात उद्योग के कारण 18 वीं सदी में प्रारंभ हुई औद्योगिक क्रांति ने यूरोप व अमेरिका जैसी महाशक्तियों को व विकसित देशों को उभारा।

आज की परिस्थितियों में इस्पात उद्योग व उन्नत तकनीक का समन्वय इसे और परिपूर्ण तरीके से व्यापक बना सकता है।

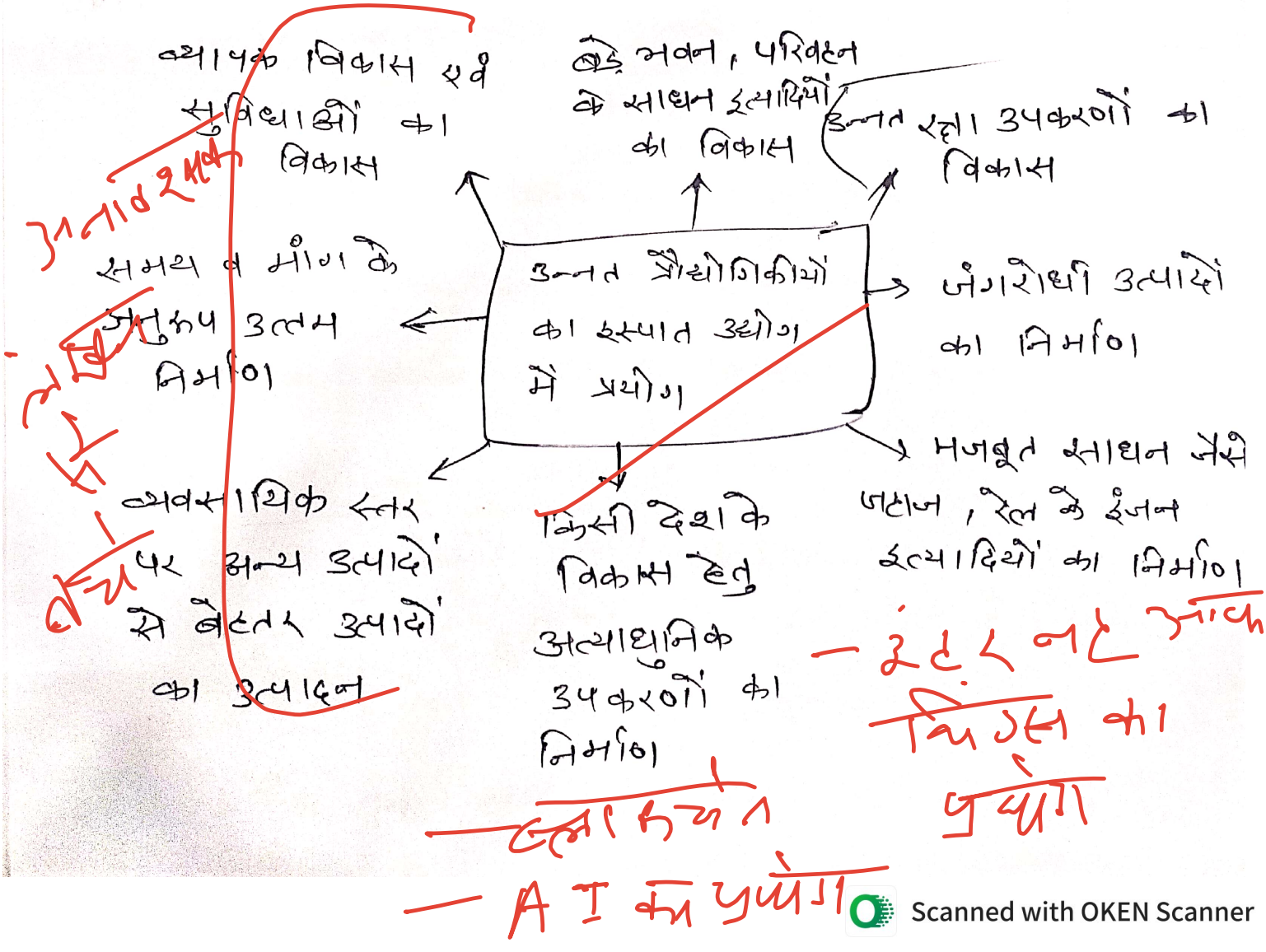

Scanned with OKEN Scanner

→ इस्पात उद्योग और नवीन प्रौद्योगिकी किसी देश के भविष्य को बेहतर कर सकेगी।

→ भारत में निर्मित INS VIKRANT इत्यादि जैसे यद्धपोतों का विकास एक उत्तम उदाहरण है।

→ इस्पात उद्योग रेलवे जैसी व्यवस्थाओं के विकास में महत्वपूर्ण सहायक है। (मुख्यत: जंगरोधी)

→ प्रौद्योगिकीयों का प्रयोग यंत्रों के साथ-साथ रोबोट जैसी संरचनाओं की संरचना को मजबूत व दक्ष कर सकेगा।।

चूँकि आधुनिक युग की माँग 'विज्ञान व रक्षा' है। अत: राष्ट्र को विकसित व सुरक्षित बनाने हेतु इस्पात उद्योग व नवीन प्रौद्योगिकीयों का समन्वय उत्तम साबित होगा।

— उत्तर की फ्रेमिंग
— दृष्टि स्पष्ट
— प्रौद्योगिकी का प्रयोग
कंटेंट भी समझ और बेहतर करें

3/15

Q.17

Q.16 किसी राष्ट्र की निर्धनता को सामान्यतः प्रतिव्यक्ति आय अथवा उपभोग की गणना करके ज्ञात किया जाता है। परंतु निर्धनता की गणना केवल आर्थिक आधार पर करना उचित नहीं है; क्योंकि हो सकता है किसी राष्ट्र की प्रतिव्यक्ति आय अधिक पर आय का समान वितरण न हो और हो सकता है, वहाँ बुनियादी सेवाओं का अभाव हो। इसी संदर्भ में निर्धनता का विभिन्न आयामों द्वारा मापन ही बहुआयामी निर्धनता मापन है।

भारत के संदर्भ में बहुआयामी निर्धनता कुछ बिंदुओं द्वारा ज्ञात की जा सकती है:

1.) सामाजिक विकास

2.) मूलभूत सुविधाएं (शिक्षा, स्वास्थ्य)

3.) बाल मृत्यु दर / जीवन प्रत्याशा

4.) प्रति व्यक्ति आय व आय का वितरण

भारतीय परिप्रेक्ष्य में गरीबी के कारण:

1.) भारतीय लोगों की विचारधारा काफी समय से पितृसत्तामक रही है, जो एक बाधक है निर्धनता उन्मूलन में।

2.) अधिक जनसंख्या व सांप्रदायिकता जैसे तत्वों की अधिकता।

3.) राजनीतिक अस्थायित्व व भ्रष्टाचार, लालफीताशाही

4.) पुरातन समाधान युक्तियाँ, संदर्भ संबंधित समाधान [illegible]

5.) महिलाओं के अधिकारों की अवहेलना।

6.) वैज्ञानिकता एवं आधुनिकता की कमी साथ ही दोनों के समन्वय का अभाव

7.) सामाजिक व्यवस्था एवं ऐतिहासिक कुरीतियाँ

उक्त समस्याएँ भले ही प्रत्यक्ष तौर पर गरीबी / निर्धनता में न झलकती हों, परंतु ये भारतीय परिपेक्ष्य में गरीबी के लिए अत्यंत जिम्मेदार हैं। इसी को दूर करने हेतु संवैधानिक उपाय व विभिन्न योजनाएँ चलायी जा रही हैं, जो भविष्य में कारगर अपेक्षित हैं।

6/15

प्र.17 भारतीय समाज प्राचीनकाल से ही जातिगत, भाषायी, संप्रदायिक वैविध्य लिए हुए है। इन्हीं आधार पर भारत को विभिन्न देशों से हटकर माना जाता है। प्राचीन समय से ही इतनी विविधता होने के बावजूद हमेशा भाईचारा व बंधुता के तत्व देखने को मिले हैं।

भूमिका ठीक है

क्षेत्रवाद अपने आप में एक अच्छी अवधारणा है, जो उस क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों के लिए समन्वय का कार्य करती है। ~~जैसे भारतीय है~~

परंतु इसका अतिवादी प्रसार हिंसा, सामाजिक तनाव, लड़ाई-झगड़े को बढ़ावा दे सकता है। इसी आधार पर अतिवादी स्वरूप बंधुता पर खतरा उत्पन्न कर सकता है।

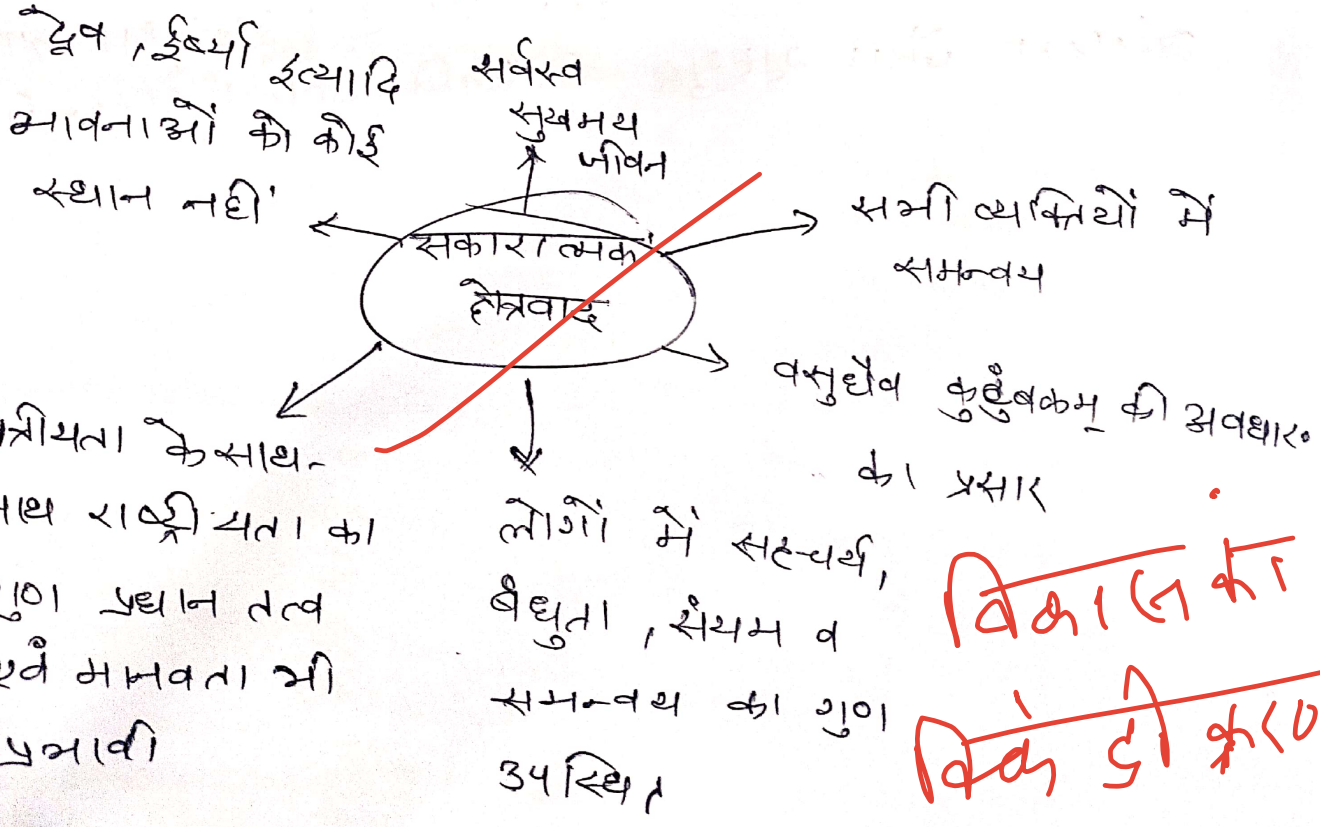

निष्कर्ष ठीक करना होगा

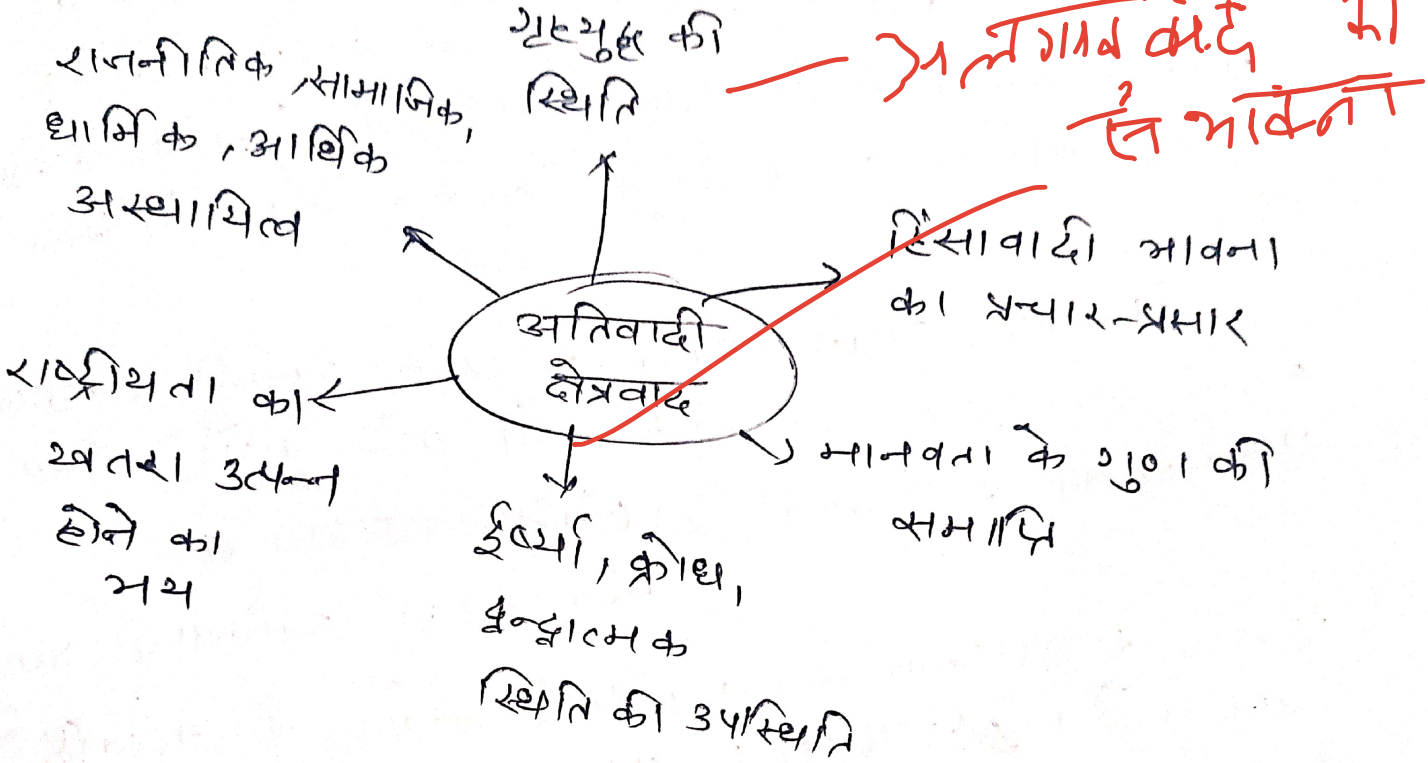

4,

— अलगाववाद की संभावना

अत: संदर्भ में ~~अतिवादी मानसिकता~~ किसी भी तत्व की अतिवादी मानसिकता सामाजिक सौहार्द्र, भाईचारा, बंधुता, समन्वय जैसे भावों के लिए उपयुक्त नहीं है। अन्यथा श्रीलंका, अमेरिका जैसी गृहयुद्ध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

प्रश्नानुसार विवरण में विस्तार है।

6/15

जनगणना किसी भी राष्ट्र की आबादी की संख्या, आयु, कार्यबल, संसाधन इत्यादि का समालोकन करने का आधार होता है।

भारत में जनगणना प्रत्येक 10 वर्षों के अंतराल पर होती आई है।

इसी संदर्भ में वर्तमान में एक मुद्दा उभरकर सामने आया है, जिसे जातिगत जनगणना नाम दिया जा रहा है।

जातिगत जनगणना के माध्यम से अनेक प्रकार के विश्लेषण किए जा सकते हैं, जो संभवतः राष्ट्र के विकास व न्याय के वितरण को सुकर बनाने में महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

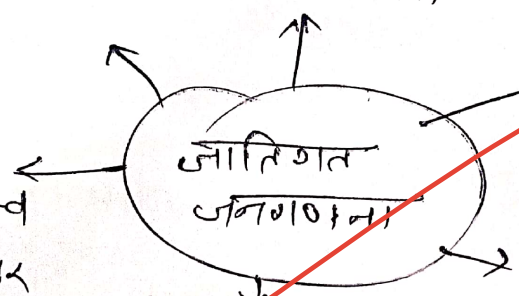

जातीय वैविध्य व नृजातीय समूहों की जानकारी मिलेगी।

विभिन्न जातियों की जनसंख्या की जानकारी

संसाधनों का वितरण जनसंख्या के आधार पर किया जा सकेगा।

जनसंख्या के आधार पर नेतृत्व की भावना मुखर होगी तथा अल्पसंख्यक सुरक्षित होंगे।

जातिगत जनगणना से योजनाओं का लाभ प्रत्येक लाभार्थी तक पहुँचाना संभव होगा।
जैसे: प्रधानमंत्री जन-धन योजना।

आरक्षण का उचित वितरण हो सकेगा। साथ ही राजनीतिक रूप से सीटों का पुनर्वितरण हो सकेगा।

उक्त व्यक्ति/लाभ न्याय का वितरण करने में सहायक होगें साथ ही नेतृत्व का जनसंख्या के आधार पर सुनिश्चित किया जा सकेगा।

कई नैतिक समस्याएं परंतु इसके साथ-साथ जैसे भेदभाव, जातिगत नीतियाँ जातिगत राजनीति, जातिगत इत्यादि उत्पन्न होंगी, जो समाज को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेंगी।

अपेक्षा सकारात्मक पक्ष अधिक होने के कारण परंतु नकारात्मक की जातिगत जनगणना को प्रासंगिक माना जा सकता है

शब्द सीमा के अनुसार उत्तर लेखन का प्रयास करें

6/15

Q.19 किसी भी देश के विकास में सर्वाधिक योगदान होता है युवाओं का और मुख्यतः कार्यशील युवाओं का। इसी आधार पर जनसांख्यिकी लाभांश की स्थिति में किसी देश की दिशा और दशा बदली जा सकती है।

भारत जनसांख्यिकी लाभांश की दृष्टि से अग्रणी है अतः इन्हें कार्यबल का हिस्सा बनाकर भारत की अर्थव्यवस्था में सहयोगी बनाया जा सकता है और GDP के 5 ट्रिलियन के लक्ष्य के प्राप्त किया जा सकता है।

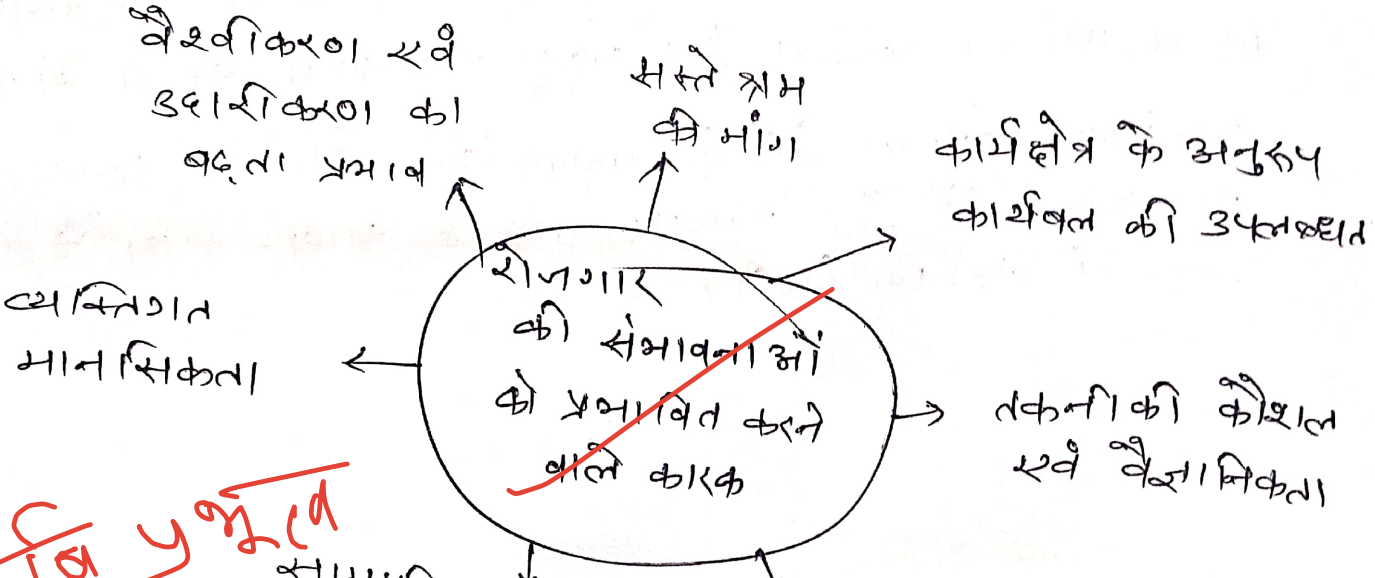

उक्त कारकों के आधार पर भारतीय संदर्भ और वैश्विक संदर्भ में रोजगार हेतु मानक निर्धारित किए जाते हैं। भारतीय संदर्भ में इनसे संबंधित चुनौतियों को दूर करने हेतु कुछ उपाय बताए गए हैं:

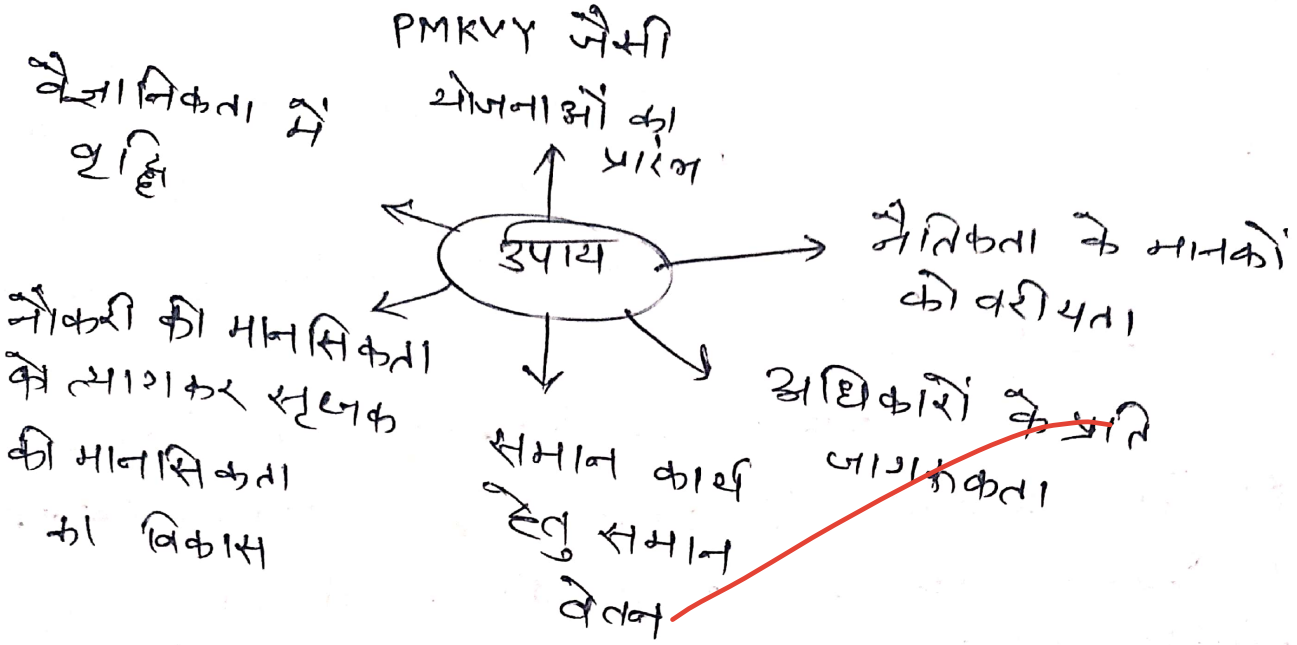

उक्त उपायों के आधार पर तथा विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन के आधार पर रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाया जा सकता है। परंतु भारतीय संदर्भ में अब स्टार्टअप योजनाओं को बढ़ावा देकर रोजगार सृजन की आवश्यकता है, जो रोजगार वृद्धि के साथ-साथ ही अर्थव्यवस्था सृजन में सहायक होगी।

6/15

Q.20 भारत कच्चे तेल का अग्रणी आयातक रहा है। चूँकि भारत एक उभरती हुई विकासशील अर्थव्यवस्था है। अतः अभी वर्तमान परिदृश्य में कच्चा तेल एक अत्यावश्यक संसाधन है।

आयात के साथ-साथ भारत में कच्चे तेल का निष्कासन भी किया जाता है (जैसे - मुंबई हाई, खंभात बेसिन, उत्तरपूर्वी); परंतु वर्तमान समय में निष्कासन में निरंतर कमी दिखाई दे रही है।

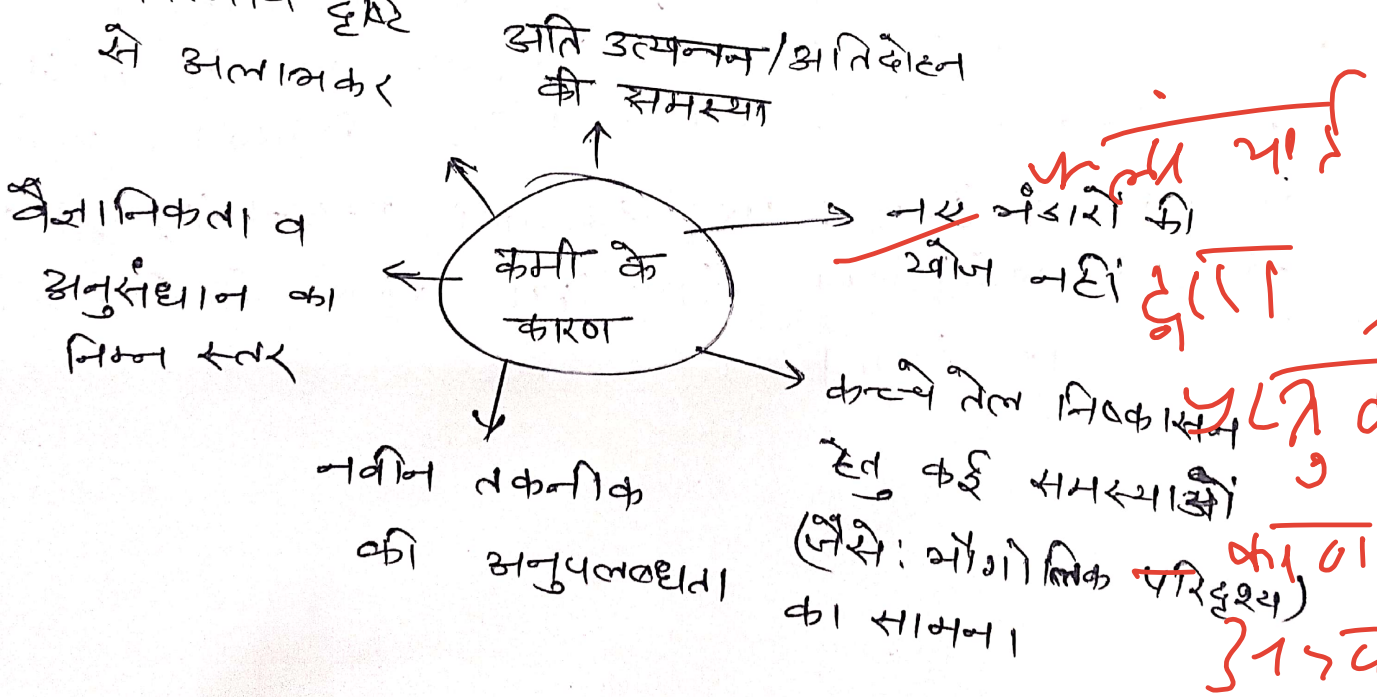

उक्त कारण मुख्य तौर पर उत्पादन में कमी हेतु जिम्मेदार है। इन समस्याओं को दूर करके तथा नए सुझावों के माध्यम से उत्पादन को पुनः बढ़ाया जा सकता है।

उपाय :

→ वैज्ञानिकता व अनुसंधान को पर्याप्त बल
→ नए क्षेत्रों की खोज

Scanned with OKEN Scanner

→ राजनीतिक लालफीताशाही एवं प्रारंभिक स्तर की समस्याओं का उचित समाधान

→ उचित मात्रा में निष्कासन नहीं

→ पर्यावरण को ध्यान में रखकर उत्पादन

→ उचित परिष्करण व उत्सर्जन इकाईयों को मौका देना चाहिए

→ आंतरिक मार्गों (जैसे - दहन) में नई तकनीकों की खोज

उक्त उपायों के आधार पर उत्पादन को सुधारा जा सकता है। साथ ही भारत को पेरिस समझौते और ग्लासगो समझौते की प्रतिबद्धताओं को पूर्ण करने हेतु नवीकरणीय ऊर्जा पर बल देना होगा; परंतु शुरुआती विकास हेतु कुछ समय तक इन ईंधनों का प्रयोग देश विकास को तीव्र करने में सहायक होगा।

6.5/15